‘तेरा वर्ष‘

सम्पूर्ण समर्पणता सप्ताह

12.05.2013

1. **स्वमान – मैं ब्रह्मा बाप समान सम्पूर्ण समर्पित आत्मा हूँ।**

- जैसे बाप और दादा समान तब बने जब सब-कुछ समर्पण कर दिया, समर्पणता से सेकण्ड में समानता आई। ऐसे फॉलो फादर।

- सम्पूर्ण समर्पण होना अर्थात् तन, मन, धन, सम्बन्ध और समय सब में अर्पण होना। जब मन भी समर्पण हो गया तो मन को बिना श्रीमत के यूज नहीं कर सकते। मन समर्पण है तो बाकी सब उस तरफ स्वतः लग जाता है। व्यर्थ संकल्प, विकल्प समर्पण हो ही जाते हैं। सम्पूर्ण समर्पण वालों के मन में सिवाय बापदादा के गुण, कर्त्तव्य और सम्बन्ध के कुछ भी सूझता नहीं।

2. **योगाभ्यास –**

अ. `जैसे भोग लगाते हो, बाप के आगे अर्पण करते हो तो उसमें शक्ति भर जाती है। ऐसे हर संकल्प, हर बोल, हर कर्म और हर कदम बाप को अर्पण करो। जितना अर्पणमय के संस्कार होंगे, उतने पॉवरफुल दर्पण बनेंगे।`

ब. `बाप की याद अर्थात् बाप के कर्त्तव्य की याद हो।`

स. `सम्पूर्ण समर्पण उसे कहा जाता है जो श्वाँसों-श्वाँस स्मृति में रहे। एक श्वॉस भी विस्मृति का न हो। ऐसे श्वाँसों-श्वॉस स्मृति में रहने वाला अर्थात् देह के अभिमान को भी समर्पण करने वाला ही सम्पूर्ण समर्पण है।` **– शिव भगवानुवाच**

3. **धारणा – सम्पूर्ण समर्पणता**

- सम्पूर्ण समर्पणता अर्थात् मनमनाभव की स्थिति में स्थित हो जाना।
- सम्पूर्ण समर्पणता अर्थात् माया के बली न बन, ईश्वरीय शक्ति में बलवान बनना।
- सम्पूर्ण समर्पणता अर्थात् बाप को जो चाहिए वो कराये, हम निमित्त हैं।
- सम्पूर्ण समर्पणता अर्थात् शरीर का भान छोड़ना और संकल्प सहित सबकुछ विल कर देना।

4. **चिंतन –**

- मैंने कहाँ तक स्वयं को बाबा और बाबा की शिक्षाओं के प्रति सम्पूर्ण समर्पित किया है?
- कौन सी बातें/संस्कार/कमजोरियाँ मेरे सम्पूर्ण समर्पणता के मार्ग में बाधक बन रही हैं?
- सम्पूर्ण समर्पित ब्रह्मा बाबा का शब्दचित्र बनायें और उन्हें देखते हुए स्वयं को उनसा बनायें।

5. **तपस्वियों प्रति –** प्रिय तपस्वियों ! प्यारे बाबा के महावाक्य हैं कि सम्पूर्ण समर्पण के लिए तीन शिक्षायें याद रखो - पहला, मन्सा के लिए मुख्य शिक्षा मिली है कि देह सहित देह के सब सम्बन्धों का त्याग कर मामेकम् याद करो। दूसरा, वाचा के लिए शिक्षा मिली है कि मुख से सदैव रत्न निकालो एवं ज्ञान-रत्नों का दान दो। तीसरा, कर्मणा के लिए याद रखो कि `जो कर्म मैं करुंगा मुझे देख सभी करेंगे` और `जो करेंगे सो पायेंगे`। यह तीन शिक्षायें याद रखने से अविनाशी सम्पूर्ण समर्पण की लिस्ट में आ जायेंगे।